शाला ध्वनि

KVS NEWS

विशेषांक: अप्रैल-2025

विद्या प्रवेश

केन्द्रीय विद्यालयों में एक आनंदमय शुभारंभ

प्रवेशोत्सव: आधारभूत शिक्षा का प्रवेशद्वार

विद्या प्रवेश

विद्या और विवेक की ओर से हार्दिक अभिनंदन!

नमस्कार!

हम हैं विद्या और विवेक! केन्द्रीय विद्यालय में यह हमारा पहला कदम है, और यहां आकर हम बहुत खुश हैं।

केन्द्रीय विद्यालय में आना हमें एक जादुई दुनिया में प्रवेश करने जैसा लगा, क्योंकि यहां हमें रंग-बिरंगे वातावरण में, नाच-गाने के साथ खेलने-कूदने का अवसर मिला। विद्यालय आते ही हमारी सारी घबराहट दूर हो गई। हम घर से स्कूल आने के लिए बहुत उत्साहित थे, क्योंकि हमारे स्कूल में एक खूबसूरत कार्यक्रम चल रहा था, जिसका नाम है- विद्या प्रवेश।

विद्या प्रवेश कार्यक्रम के तहत स्कूल के शुरुआती दिनों में न तो किताबों का बोझ होता है और न ही कोई कठिन पाठ्यक्रम। बस खूब मज़े, खेल-कूद, चित्र बनाना और ढेर सारी हँसी! हमारे शिक्षकों और माता-पिता ने हमारे लिए सब कुछ बहुत सुंदर और आसान बना दिया है।

हमारी कक्षा किसी परियों की कहानी जैसी लग रही थी। कई रंगों के साथ खूबसूरती से सजी हुई। हम सुबह प्रार्थना करते हैं, गीत गाते हैं और हमने बहुत सारे नए दोस्त भी बनाए हैं।

यह पुस्तिका हमारे स्कूल में प्रवेशोत्सव के शुरुआती दिनों की खुशनुमा तस्वीरों, जानकारियों और यादों से भरी हुई है। आइए, देखिए कि हम कितने मजेदार ढंग से सीख रहे हैं। हमें उम्मीद है कि इसे पढ़कर आपके चेहरे पर भी मुस्कान आ जाएगी।

तो फिर आइए, जानते हैं प्रवेशोत्सव के बारे में।

~विद्या और विवेक

परिचय

उज्ज्वल भविष्य की ओर नन्हे कदम

स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार और नवाचार के तहत, केन्द्रीय विद्यालय संगठन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 की सिफारिशों के अनुरूप कक्षा I के बच्चों के लिए 'विद्या प्रवेश' कार्यक्रम चला रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य केन्द्रीय विद्यालयों में प्रवेश करने वाले छोटे बच्चों के लिए एक ऐसा समृद्ध, सुरक्षित और आनंददायक वातावरण तैयार करना है, जिससे उनकी भावनात्मक सुरक्षा और सीखने की प्रक्रिया में निखार आए।

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, एक बच्चे के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत से अधिक विकास छह वर्ष की आयु पूरी करने से पहले ही हो जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा और बौद्धिक विकास के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN) की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। विद्या प्रवेश कार्यक्रम बच्चों को आयु-उपयुक्त और खेल-आधारित अधिगम अनुभव प्रदान करता है, जो उनके समग्र विकास को सुनिश्चित करता है। बच्चों को सीखने में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए यह कार्यक्रम बनाया गया है, जिसमें बड़ी संख्या में बच्चे बिना किसी पूर्व-प्राथमिक अनुभव या बुनियादी तैयारी के कक्षा I में प्रवेश करते हैं।

यह मॉड्यूल कक्षा I में प्रवेश करने वाले बच्चों को प्राथमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम के साथ तालमेल बैठाने और सीखने में सहायता प्रदान करता है। यह कार्यक्रम बच्चों में मौलिक भाषा और गणित से लेकर सामाजिक, भावनात्मक और मोटर कौशल तक के आवश्यक कौशलों को विकसित करता है, जिसे आनंददायक व इंटरैक्टिव गतिविधियों के माध्यम से सिखाया जाता है।

सपनों से सजी राह, सुनहरे कल की ओर!

*विद्या प्रवेश कार्यक्रम की शुरुआत भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा की गई थी, ताकि **सीखने के संकट (Learning Crisis)** व प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले ऐसे बच्चे जो बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं उनकी पहचान करना है। एक अनुमान के मुताबिक देश की प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में लगभग पाँच करोड़ से अधिक ऐसे बच्चें हैं जो सरल पाठ पढ़ने- समझने और मूल जोड़-घटाव करने में भी सक्षम नहीं हैं।*

भारत सरकार का राष्ट्रीय मिशन विद्या प्रवेश, निपुण भारत का एक अभिन्न हिस्सा है —जिसका उद्देश्य बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता सुनिश्चित करना है। इसके राष्ट्रीय लक्ष्य की बात करे तो इसके जरिए कक्षा तीन तक के प्रत्येक बच्चे को आवश्यक अधिगम स्तर तक पहुंचाना है, ताकि प्रारंभित बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के असमान पहुंच के कारण कोई भी बच्चा पीछे न रह जाए। विद्या प्रवेश ऐसे बच्चों के लिए एक सेतु (Bridge) का कार्य करता है, जो विभिन्न घरेलु या पूर्व-प्राथमिक पृष्ठभूमियों से औपचारिक विद्यालय में प्रवेश करने की इच्छा रखते हैं। इसके अंतर्गत ये लक्ष्य भी निर्धारित किया गया है कि वर्ष 2030 तक भारत को एक स्कूली शिक्षा के तौर पर बहेतर राष्ट्र के रूप में तैयार करना है।

प्रवेशोत्सव

स्कूली शिक्षा की एक सुखद शुरुआत

प्रवेशोत्सव *एक* ***उत्सवमयी स्कूल आरंभ कार्यक्रम*** *है, जो* ***कक्षा-I के नए छात्रों*** *के लिए* ***विद्या प्रवेश*** *की शुरुआत को चिह्नित करता है। इस आयोजन का उद्देश्य है कि बच्चों का* ***स्कूल में पहला अनुभव यादगार और स्वागतपूर्ण*** *हो।*

प्रवेशोत्सव *के माध्यम से बच्चों के लिए* ***इंटरैक्टिव गतिविधियाँ, कहानियों का सत्र, स्कूल भ्रमण, कठपुतली शो, पौधा रोपण****, और* ***शिक्षकों से मिलने-जुलने के कार्यक्रम*** *आयोजित किए जाते हैं। इन गतिविधियों के ज़रिए बच्चों का विद्यालय से* ***भावनात्मक जुड़ाव*** *मज़बूत होता है।*

यह कार्यक्रमः

पहली बार स्कूल जा रहे बच्चों की ***चिंता और घबराहट को कम*** *करता है,*

साथियों के बीच ***सामाजिक संबंधों को प्रोत्साहित*** *करता है,*

अभिभावकों को बच्चे की शिक्षण यात्रा में सक्रिय सहभागी *बनाता है।*

यह एक ***खुशहाल और तनावमुक्त स्कूली शुरुआत*** *है, जो* ***खेल आधारित शिक्षाशैली*** *(play-based pedagogy) पर केंद्रित है, ताकि बच्चों के लिए सीखना आनंददायक और सहज हो सके।*

केन्द्रीय विद्यालय
जहाँ सपने मुस्कुराते हैं!

देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों (केवी) ने विद्या प्रवेश को सक्रिय रूप से अपनाया है और प्रारंभिक स्तर की शिक्षा में इसके प्रभावी एकीकरण को सुनिश्चित किया है। नवाचारपूर्ण रणनीतियों और समुदाय की भागीदारी के माध्यम से, केन्द्रीय विद्यालय इस दिशा में एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

केन्द्रीय विद्यालयों द्वारा उठाए गए प्रमुख कदम:

- ***अभिभावक उन्मुखीकरण एवं शिक्षक क्षमता विकास***
  नियमित उन्मुखीकरण सत्रों और कार्यशालाओं के माध्यम से शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया और अभिभावकों को विद्या प्रवेश के उद्देश्यों एवं लाभों से अवगत कराया गया।
- ***थीम-आधारित, प्रिंट-समृद्ध कक्षाओं का निर्माण***
  कक्षा को रंगीन, आकर्षक और विषय-आधारित सामग्री से सजाया गया, जिससे बच्चों में जिज्ञासा और अन्वेषण की भावना बढ़ाने में मदद मिली।
- ***स्थानीय भाषाओं, लोक कहानियों और सांस्कृतिक परंपराओं का समावेश***
  बच्चों में स्थानीय पहचान और जुड़ाव की भावना को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्रीय भाषा, संस्कृति और लोककथाओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।
- ***समावेशी शिक्षा, संवेदी खेल और भावनात्मक जुड़ाव पर बल***
  विविध शिक्षण आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए गतिविधियों को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि वे बच्चों के संवेदी विकास और भावनात्मक संबंधों को प्रोत्साहित कर सकें।

विद्या प्रवेश मॉड्यूल के परिणाम:

- ***छात्रों की सहभागिता में वृद्धि***
  बच्चे गतिविधियों में अधिक उत्साह और रुचि के साथ भाग ले रहे हैं।
- ***कक्षा I में सुगम प्रवेश***
  लचीले व संरचित प्रारंभिक शिक्षण अनुभव ने औपचारिक स्कूलिंग में प्रवेश को सहज बनाया है।
- ***विद्यालय और घर के बीच बेहतर साझेदारी***
  अभिभावकों की भागीदारी और संवाद में वृद्धि हुई है, जिससे घर और विद्यालय के बीच बेहतर तालमेल बना है।
- ***संचार कौशल में सुधार***
  बच्चों की बोलने की क्षमता और आत्मविश्वास में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है।
- ***व्यवहार में सकारात्मक बदलाव***
  बच्चों में सामाजिक सहभागिता, सहानुभूति और अनुशासन जैसे गुण विकसित हो रहे हैं।
- ***ध्यान केंद्रित करने की क्षमता और सहभागिता में सुधार***
  छात्र कक्षा में अधिक ध्यान से सुनते हैं और सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
- ***मोटर कौशल का विकास***
  खेल आधारित और व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के मोटर स्किल्स (सूक्ष्म और स्थूल) में प्रगति देखी गई है।
- ***अभिभावकों की संतुष्टि***
  बच्चों की समग्र प्रगति को देखकर अभिभावकों ने संतोष और प्रशंसा व्यक्त की है।

शिक्षा की रोशनी से
नन्हें सितारों का मार्गदर्शन

विद्या प्रवेश का उद्देश्य

- यह सुनिश्चित करना कि जब बच्चे कक्षा-1 में प्रवेश करें, तो उनका एक स्नेहमय, सुरक्षित और आनंददायक वातावरण में स्वागत किया जाए।
- बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देना, जिसके लिए उम्र के अनुरूप खेल-आधारित गतिविधियाँ प्रदान की जाएँ, जो उनके विद्यार्थी जीवन के लिए आवश्यक क्षमताएँ विकसित करने में सहायक हों।
- शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में जब बच्चे कक्षा-1 के पाठ्यक्रम में प्रवेश करते हैं, तब उनके सीखने की प्रक्रिया और अनुकूलन में सहयोग करना।
- एक संरचित विद्यालय तैयारी कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों में शारीरिक तंदुरुस्ती, मानसिक सजगता, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा भावनात्मक संतुलन को विकसित करना।

विद्या प्रवेश का लक्ष्य

- कक्षा-1 में प्रवेश करने वाले सभी बच्चों के लिए, चाहे उनका पूर्व-प्राथमिक अनुभव कुछ भी रहा हो या न रहा हो, विद्यालय हेतु तैयारी सुनिश्चित करना।
- बच्चों को विद्यालय के वातावरण, दिनचर्या और नए संबंधों के साथ सहजता से समायोजन करने में मदद कर औपचारिक स्कूली शिक्षा में सुगम प्रवेश को संभव बनाना।
- खेल-आधारित, उम्र और विकास के अनुसार उपयुक्त शिक्षण अनुभव प्रदान करना, जो आनंददायक, प्रेरणादायक वातावरण में गतिविधियों, चित्रों और इंटरऐक्टिव वर्कशीट्स के माध्यम से प्रस्तुत किए जाएँ।
- मूलभूत क्षमताओं जैसे सहायता करना, बाँटना, साथियों के साथ मेल-जोल रखना, दिनचर्या का पालन करना, नई परिस्थितियों में ढलना, और एकाग्रता एवं ध्यान की अवधि को बढ़ाना — इनका विकास करना।
- बच्चों को मौलिक साक्षरता और संख्यात्मक अवधारणाओं से स्वाभाविक रूप से परिचित कराना, जो खोजपरक, खेलपूर्ण और संवादात्मक अनुभवों के माध्यम से हो।
- निपुण भारत (NIPUN Bharat) दिशा-निर्देशों के अनुसार, कार्यक्रम को पूर्व-प्राथमिक 3 (बालवाटिका) वर्षों के अधिगम प्रतिफलों के साथ संरेखित करना।
- बच्चों, विद्यालयों और परिवारों के बीच एक मजबूत सहयोग तंत्र विकसित करना, जिससे औपचारिक शिक्षा की शुरुआत सुगम, आनंददायक और सार्थक बन सके।

विद्या प्रवेश कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु नवाचारपूर्ण कदम

देश भर में केन्द्रीय विद्यालयों ने विद्या प्रवेश कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन के लिए विभिन्न नवाचारपूर्ण उपाय अपनाए:

1 स्वागतपूर्ण वातावरण:

छात्रों व अभिभावकों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम, सुसज्जित कक्षाएँ और प्रवेशोत्सव मनाया गया। नए छात्रों को सहज अनुभव दिलाने के लिए वरिष्ठ छात्रों के साथ जोड़ा गया।

2 विद्यालय से परिचय:

विद्यालय भ्रमण के माध्यम से बच्चों को परिसर और सुविधाओं से परिचित कराया गया, जिससे आत्मीयता और सहजता विकसित हुई।

3 'लिटिल लीडर्स' पहल:

बच्चों को छोटे नेतृत्व दायित्व सौंपे गए, जैसे पंक्ति प्रमुख, दिन का सहायक आदि। इससे उनके आत्मविश्वास और सामाजिक कौशल में बढ़ोतरी हुई।

4 कार्य के माध्यम से अधिगम:

कम लागत की शिक्षण सामग्री, कहानियाँ, संगीत और सहयोगात्मक गतिविधियों का उपयोग कर अधिगम को रोचक और व्यवहारिक बनाया गया।

5 बाहरी अधिगम एवं प्रकृति भ्रमणः

नियमित खेल, प्रकृति भ्रमण और बागवानी गतिविधियों से बच्चों में पर्यावरण क्षमता और प्रकृति से जुड़ाव को प्रोत्साहन मिला।

6 खेल के स्थान एवं खिलौना पुस्तकालयः

रोल-प्ले, कला और इंद्रिय गतिविधियों के लिए समर्पित क्षेत्र। संगीत, नृत्य और लोककला को अनुभवात्मक अधिगम में एकीकृत किया गया।

7 साप्ताहिक विषयगत योजनाः

मैं, मेरा परिवार, प्रकृति जैसे साप्ताहिक विषयों को बच्चों के जीवन अनुभनों से जोड़ा गया, जिससे अधिगम प्रासंगिक और वास्तविक बना।

8 कहानियाँ एवं कठपुतलीः

ध्यान केंद्रित करने, संप्रेषण और रचनात्मकता बढ़ाने के लिए कहानियों और कठपुतलियों का प्रयोग

9 **संरचित दैनिक दिनचर्या:**

खेल, योग, खोज और माइंडफुलनेस जैसी गतिविधियों के साथ संतुलित दिनचर्या सुनिश्चित की गई।

10 **अभिभावक एवं सामुदायिक सहभागिता:**

नियमित ओरिएंटेशन, संवाद सत्र तथा कक्षा गतिविधियों में अभिभावकों व समुदाय के सदस्यों की भागीदारी।

11 **डिजिटल सहभागिता:**

प्रोजेक्टर, लर्निंग ऐप्स और इंटरएक्टिव बोर्ड के माध्यम से शिक्षण को तकनीकी रूप से समृद्ध किया गया।

12 **समावेशी अभ्यास:**

विविध विद्यार्थियों के लिए व्यक्तिगत योजनाएँ, बहुभाषी कक्षाएँ और समूह गतिविधियाँ सुनिश्चित की गईं।

13 सतत शिक्षण प्रशिक्षणः

स्वच्छता, सुरक्षा और बाल केन्द्रीय शिक्षण पर कार्यशालाएँ आयोजित की गईं, ताकि छात्रों की समग्र भलाई सुनिश्चित की जा सके।

14 'मेरे बारे में' गतिविधियाँः

हर बच्चे की पृष्ठभूमि और रुचियों को समझने के लिए विशेष वर्कशीट्स, जिनसे व्यक्तिगत संवाद और अधिगम योजनाएँ बनाई गईं।

15 प्रतिभा प्रोत्साहन पुरस्कारः

प्रार्थना सभा में प्रतिभा प्रदर्शन और पुरस्कार वितरण से आत्मविश्वास एवं रचनात्मकता को बढ़ावा दिया गया।

16 निरंतर मुल्यांकनः

औपचारिक परीक्षाओं के स्थान पर खेल-आधारित मूल्यांकन, विद्यार्थी पोर्टफोलियो और अवलोकनात्मक अभिलेखों के माध्यम से समग्र निगरानी की गई।

रोमांचक गतिविधियों से खुशियों के पलों का एहसास

मिट्टी से कलाकारी

कठपुतली कला प्रदर्शन

वेजिटेबल स्टैम्पिंग

पौधारोपण

रंगोली बनाना

हस्तकला

कागज़ के फूल बनाना

मास्क बनाना

लैंप बनाना

म्यूज़िकल चेयर

कहानी सुनाना

रेत में अक्षर लिखना

प्रकृति के साथ

मैजिक स्लेट का वितरण

बच्चों का स्वागत

नृत्य प्रदर्शन

अन्य गतिविधियाँ

पोस्टर बनाना

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता

पेपर क्राफ्ट्स

पज़ल टाइम

ट्विस्टर गेम

जादुई पिटारा

फोनिक्स खेल

सेल्फी पॉइंट

आकार की पहचान

मेरा लक्ष्य

स्टिक क्राफ्ट

आउटडोर गेम्स

बच्चों के जीवन पर विद्या प्रवेश का सकारात्मक प्रभाव व इसके लाभ

विद्या प्रवेश कार्यक्रम के कार्यान्वयन से कक्षा 1 के विद्यार्थियों को विद्यालयी परिवेश में सहजता से ढलने और सीखने में काफी आसानी हुई है।

विद्या प्रवेश से विद्यार्थियों को हुए लाभ

1.

औपचारिक शिक्षा की ओर सहज और आनंदमयी कदम

2.

संज्ञानात्मक और भाषाई कौशल में वृद्धि

3.

साक्षरता और संख्यात्मकता की मजबूत आधारशिला

4.

रचनात्मकता और आत्म-अभिव्यक्ति में वृद्धि

5.

सामाजिक और भावनात्मक विकास

6.

सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक कौशल में वृद्धि

7.

कक्षा में सहभागिता और संलग्नता में सुधार

8.

पर्यावरण के प्रति जागरूकता में वृद्धि

9.

अभिभावक और विद्यालय के बीच विश्वसनीय सहयोग

10.

श्रवण क्षमता और समझने की शक्ति में सुधार

11.

समावेशी और आनंदमयी शिक्षण वातावरण की स्थापना

12.

स्कूल की सक्रिय भागीदारी और जुड़ाव में वृद्धि

13.

आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता का विकास

14.

तनावमुक्त और आनंददायक शिक्षण वातावरण का निर्माण

15.

अलगाव चिंता में कमी और उपस्थिति एवं भागीदारी में सुधार

16.

ध्यान केंद्रित करने की क्षमता, शब्दावली और प्रारंभिक साक्षरता कौशल में सुधार

17.

आत्मविश्वास से भागीदारी और स्वस्थ संवाद कौशल का विकास

18.

सहानुभूति, साझेदारी और आपसी संबंधों में वृद्धि

अभिभावकों और शिक्षिकों की अभिव्यक्तियाँ

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1, कासरगोड

जब मेरे बेटे ने केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1, कासरगोड़ में पहली कक्षा में प्रवेश लिया तब मैं उत्साह और घबराहट—दोनों भावनाओं से भरी हुई थी। लेकिन 'विद्या प्रवेश' की गतिविधियों ने मेरे मन को पूरी तरह से बदल दिया। विद्यालय का आनंददायक वातावरण, रंग-बिरंगी सजावट और बच्चों के लिए प्रस्तुतियों ने बच्चों को विशेष और घर जैसा महसूस कराया।

खेलों, संगीत सत्रों और सहभागिता आधारित शिक्षण पद्धतियों की मदद से मेरा बेटा जल्दी ही स्कूल से जुड़ गया। शिक्षकों ने शिक्षा को खेल-खेल में सिखाया और अभिभावकों से लगातार संपर्क में रहे। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि स्कूल ने बच्चों को समावेशी वातावरण प्रदान किया,यहाँ तक कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का भी ख्याल रखा गया।

प्रतियोगिताएं और दादा-दादी दिवस जैसे कार्यक्रमों ने एक अपनत्व की भावना को जन्म दिया। शिक्षकगण बेहद धैर्यवान और स्नेही रहे, और बच्चों को खुलकर अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करते रहें। अब मेरा बच्चा उत्साह के साथ स्कूल जाने के लिए तैयार होता है। 'प्रवेशोत्सव' वास्तव में एक संवेदनशील और सुदृढ़ नींव है, जो बच्चों के भावनात्मक और सामाजिक विकास को संबल देती है।

— डॉ. डलियामोल (अभिभावक, रिध्विक महेन्द्रन, कक्षा I)

केन्द्रीय विद्यालय, महू

प्रवेश उत्सव का आयोजन बहुत ही शानदार और खुशनुमा था। बच्चों का तिलक लगाकर स्वागत करना और सरस्वती वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत बहुत अच्छी लगी। हमें वेशभूषा और फीस संबंधी जानकारी स्पष्ट रूप से मिली। बच्चों के रंगारंग कार्यक्रम देखकर बहुत आनंद आया। प्राचार्य महोदय के प्रेरणादायक वचन और शिक्षकों का स्नेहपूर्ण व्यवहार सराहनीय है। सेल्फी पॉइंट और हैंड प्रिन्ट गतिविधियाँ बच्चों को खूब पसंद आई।

— धर्मेश कुमार (अभिभावक, निहारिका मालावत, कक्षा I)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय आयुध निर्माणी रायपुर, देहरादून

मेरा बेटा अमृतांश जब पहली बार स्कूल गया तो हमें चिंता थी कि वह नए वातावरण में कैसे ढल पाएगा। लेकिन "विद्या प्रवेश" कार्यक्रम की वजह से उसका विद्यालय में प्रवेश बिल्कुल सहज और आनंददायक रहा। वह हर दिन नई-नई गतिविधियों और खेलों के बारे में उत्साह से बताता है। स्कूल गतिविधियों ने उसमें आत्मविश्वास, विनम्रता और सीखने की रुचि को बढ़ाया है। मैं इस पहल के लिए विद्यालय और शिक्षकों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

— विपिन घिल्डियाल (अभिभावक, अमृतांश, कक्षा-I)

केन्द्रीय विद्यालय, नारायणपुर

मेरी बेटी आपके स्कूल में कक्षा पहली (ब) की छात्रा है। आपके विद्यालय में होने वाली समग्र गतिविधियों ने मेरे बच्चे के विकास में अहम भूमिका निभाई है। विद्यालय द्वारा आयोजित विद्या प्रवेश कार्यक्रम बहुत ही अच्छा है। इस कार्यक्रम का बच्चों पर सकारात्मक असर हो रहा है और इसने बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास और उनकी विभिन्न क्षमताओं को निखारने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विद्या प्रवेश के कारण बच्चे नए कौशल सीखने और क्षमताओं के विकास हेतु प्रेरित हो रहे हैं। सभी शिक्षकों का विद्यार्थियों के प्रति प्रेम और समर्थन काबिले तारीफ है। इसके लिए मैं आपको बहुत बहुत धन्यावाद देती हुं।

— ज्योति वर्मा (अभिभावक, अक्षिता वर्मा, कक्षा-I)

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1, सीपीसीआरआई, कासरगोड

"विद्या प्रवेश कार्यक्रम ने कक्षा 1 के छात्रों का स्वागत करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है। यह अन्वेषण, अभिव्यक्ति और आपसी संबंधों की एक सुंदर यात्रा है। संगीत, कला, खेलों और कहानी-कथन के माध्यम से बच्चे सहजता से स्कूल में घुल-मिल गए और अपनी बुनियादी कौशल को विकसित किया। जब शर्मीले बच्चे आत्मविश्वास के साथ भाग लेने लगे, तो वह पल बेहद आनंददायक था। यह दृष्टिकोण प्रत्येक बच्चे को अपनी गति से सीखने की आज़ादी देता है। एक शिक्षक के रूप में, शुरुआत से ही बच्चों को आनंदपूर्वक सीखते देखना अत्यंत संतोषजनक अनुभव रहा।"

— जयेश्मा के, प्राथमिक शिक्षिका

केन्द्रीय विद्यालय, हरनौत

"विद्या प्रवेश" कार्यक्रम ने हमारी कक्षाओं में नया उत्साह भर दिया है। जहां पहले नन्हे बच्चे कक्षा में डरकर प्रवेश करते थे, वहीं आज वे खिलखिलाते हुए दौड़कर आते हैं। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमने बच्चों की प्राकृतिक जिज्ञासा को पहचानना सीखा है- "उनके हर क्यों? और कैसे?" का उत्तर देना अब हमारी शिक्षण पद्धति का अभिन्न अंग बन गया है।

खेल- खेल में सीखने की इस अवधारणा ने न केवल बच्चों को बल्कि हम शिक्षकों को भी पुन: बचपन की मासूमियत से जोड़ दिया है। आज जब मैं देखता हूँ के कैसे बच्चों ने पहले दिन रोने के बाजाय स्वंय अक्षर लिखने का प्रयास किया, तो लगता है यही तो शिक्षण का सच्चा सुख है।

— दीपक कुमार, प्राथमिक शिक्षक

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, जशपुर

विद्या प्रवेश एक महत्वपूर्ण शिक्षा कार्यक्रम है, जो बच्चों को पहली बार स्कूल की दुनिया से परीचित कराता है। यह कार्यक्रम बच्चों के जीवन में एक नई शुरुआत की तरह है, जहां वे शैक्षिक यात्रा की ओर कदम बढ़ाते हैं। विद्या प्रवेश के अंतर्गत विद्यालय में करवाई गई विभिन्न गतिविधियों से बच्चों की न केवल पढ़ाई के प्रति रुची उत्पन्न हुई, बल्कि वे स्कूल के माहौल में सामंजस्य स्थापित कर पाए। इस प्रोग्राम से धीरे-धीरे बच्चों में आत्मविश्वास, सामाजिक कौशल और जिम्मेदारी की भावना भी विकसित हुई। इससे बच्चे शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत हुए। इसके अलावा बच्चों में अनुशासन, सहनशीलता और टीमवर्क जैसे महत्वपूर्ण गुण भी विकसित हुए। वे अपनी भावनाओं को बहेतर तरीके से व्यक्त करने में सक्षम होने लगे ओर वे अपने शिक्षकों के प्रति अधिक विश्वासपूर्ण हुए। इस तरह विद्या प्रवेश के अंतर्गत करवाई गई विविध गतिविधियों से बच्चों का सर्वांगीण विकास करने का काम किया गया और इसके परिणाम सराहनीय रहे।

— ज्योति शर्मा, प्राथमिक शिक्षिका

केन्द्रीय विद्यालय क्रं-1, रायपुर

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1, रायपुर (द्वितीय पाली) में शैक्षणिक सत्र 2024-25 और वर्तमान शैक्षणिक सत्र 2025-26 में कक्षा पहली में विद्याप्रवेश का कार्यक्रम बहुत ही भव्य रूप से सुनियोजित तरीके से आयोजित किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के क्रियान्वयन हेतु विद्यालय स्तर पर शिक्षिकों एवं अभिभावकों (हितधारकों) के लिए विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। ताकि वे विद्यालय की कार्यप्रणाली से अवगत हों। इसके अलावा विद्यार्थियों के लिए कक्षा एवं विद्यालय स्तर पर विभिन्न क्रियाकलाप तथा गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जो कि विद्यार्थियों के व्यक्तिगत सर्वांगीण विकास में लक्षित अधिगमों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई।

— ज्योति कुलकर्णी, प्राथमिक शिक्षिका

KVS NEWS

Media Spotlight on Vidya Pravesh

The Tribune
VOICE OF THE PEOPLE

Shimla Apr 22, 2025

JAKHU KV HOSTS AN ORIENTATION FOR CLASS I STUDENTS AND PARENTS.

Zirakpur Apr 16, 2025

THE SCHOOL ORGANIZED A 'VIDYA PRAVESH' ORIENTATION PROGRAM FOR CLASS I STUDENTS.

हिन्दुस्तान

वाराणसी Thu, 17 April 2025

केवी में प्रवेशोत्सव, नए छात्रों का स्वागत

अमन यात्रा

कानपुर May 9, 2024

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय माती में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम मनाया गया

दैनिक भास्कर

भोपाल 24 june 2024

पीएमश्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1 में विद्या प्रवेश कार्यक्रम: छात्रों का तिलक लगाकर किया स्वागत

सहरसा 10 May 2024

केन्द्रीय विद्यालय सहरसा में बच्चों के लिए विद्या प्रवेश समारोह का आयोजन

“नन्हे परिंदों के स्कूल की ओर पहले कदम का जश्न है- विद्या प्रवेश!”

शिक्षकों का विशेष स्थान

“हर मुस्कान एक मील का पत्थर है, हर सवाल एक नई खोज की सैर जैसा है। आइए इन खुशहाल शुरुआत का जश्न मनाएं!”

यादों की खिड़की

केन्द्रीय विद्यालय के पहले हफ्ते की यादें – हंसी, सीखने और नई दोस्ती को “यादों की खिड़की” में कैद करना।

अभिभावकों का मत

मेरा बच्चा हर सुबह उत्साह से स्कूल जाने का इंतज़ार करता है। ‘विद्या प्रवेश’ ने मेरे शर्मीले बच्चे को खुलने में मदद की।

कला एवं शिल्प प्रदर्शन

अपशिष्ट सामग्री को रंगों की मदद से पुनः उपयोग कर उसे अद्भुत कृतियों में बदलना।

प्रकृति का अनुभव

प्रकृति से जुड़ते बच्चों ने अपनी यात्रा के शुरूआती पहले हफ्ते में रंग-बिरंगे फूल, तितलियाँ और चहचहाते हुए पक्षियों को देखा।

खुशियों के खास पल

जब पूछा गया, ‘जंगल का राजा कौन है?’ तो एक छोटे चैपयिन ने शोर मचाया - ‘मेरे पापा!’

“स्कूल का पहला दिन एक बच्चे के लिए केवल उसके भविष्य के निर्माण की गाथा नहीं होती, बल्कि यह उसके जीवन की एक खूबसूरत कहानी की शुरुआत होती है।”

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

© केन्द्रीय विद्यालय संगठन

शाला ध्वनि न्यूज़लेटर

अंक: अप्रैल 2025

संरक्षक: निधि पाण्डे, आयुक्त

संपादक: डॉ. पी. देवकुमार, अपर आयुक्त (शै.)

संपादकीय प्रभारी: सचिन राठौर, सहायक संपादक

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के लिए अपर आयुक्त (शै.) द्वारा प्रकाशित

पाठक अपनी टिप्पणियाँ और सुझाव इस ई-मेल के माध्यम से भेज सकते हैं: shaaladhwani@gmail.com